ISSN 2349-638X

REVIEWED INTERNATIONAL JOURNAL

AAYUSHI INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL (AIIRJ)

MONTHLY PUBLISH JOURNAL

VOL-II ISSUE-VI JUNE 2015

Address
- Vikram Nagar, Boudhi Chouk, Latur.
- Tq. Latur, Dis. Latur 413512
- (+91) 9922455749, (+91) 9158387437

Email
- editor@aiirjournal.com
- aiirjpramod@gmail.com

Website
- www.aiirjournal.com

CHIEF EDITOR – PRAMOD PRAKASHRAO TANDALE

छायावादी काव्यधारा एक विवेचन

प्रा. डॉ. ठाकूर विजयसिंह
यशवंत महाविद्यालय, नांदेड

हिन्दी की छायावादी काव्यधारा का उद्‌भव तत्कालीन राजनितिक, सामाजिक, धाम्रिक और साहित्यिक परिस्थितीयों में देखा जा सकता हैं। इन परिस्थितीयों का अव्ययन इस कविता की धारा के सम्यक् विश्लेषण के लिये आवश्यक हैं।

राजनितिक परिस्थिती

छायावादी काव्यधारा दो महायुद्धों के बीच की कविता है। इस समय स्वतन्त्रता आन्दोलन का नेतृत्तव राष्ट्रपिता गांधी् कर रहे थे जिनके प्रमुख अस्त्र थे, सत्य, अहिंसा एवं असहयोग की नीति। यद्यपि प्रारम्भिक रूप में इन उपकरणों से कोई विशेष सफलता नहीं मिली, किन्तु न तो गांधी जी इससे निरूत्साहित हुए और न देशवासी। हिनदी के कुछ विद्वानों ने छायावादी काव्य की वेदना और निराशा का सम्बन्ध प्रथम महायुद्ध के बाद अंग्रेजी शासन का अपने वचनों को न पूरा करना, रीलट एक्ट तथा १६१६ के अवज्ञा आन्दोलन की असफलता के साथ जोड़ा है, किनतु यह नितान्त असंगत है। असफलता के अनन्तर भी भारतीय स्वतन्त्रता - संग्राम के सेनानियों के लक्ष्य, नीति और अदम्य उत्साह में तिल भर भी अनतर नहीं आया। इन्हीं सतत प्रयत्नों और अप्रतिहत उत्साह-शक्ति के परिणाम स्वरूप १६४७ में स्वतन्त्रता की प्राप्ति हुई। छायावादी कवियों की राजनीतिक निराशा नहीं प्रत्युत औद्योगिकता से प्रेरित उनका व्यक्तिवाद है तथा उनका काव्य के प्रति एक विशेष दृष्टिकोण है। यह तो एक संयोग था कि छायावाद का जब जन्म हुआ उस समय राष्ट्रीय आन्दोलन चल रहे थे और यदि वे न भी होते तब भी छायावादी काव्य का जन्म अवश्यभावी था और उसका स्वरूप भी यही होता जो अब हमारे सामने है। डॉ.शिवदानसिंह के शब्दो में, ''इसीलिये इसी बात को स्पष्ट समझ लेने की जरूरत है कि यदि हमारा देश पराधीन न होता और हमारे यहाँ राष्ट्रीय आन्दोलन की आवश्यकता न रही होती, तो भी आधुनिक औद्योगिक समाज (पूँजीवाद) का विकास होते की काव्य में स्वच्दन्दवादी भावना और व्यक्तिवाद की प्रवृतती मुखर हो उठती। इसलिये छायावादी कविता राष्ट्रीय आन्दोलन या जागृति का सीधा परिणाम नहीं बल्कि प्राश्चात्य अर्थ-व्यवस्था और

संस्कृति के सम्पर्क में आने के परिणाम स्वरूप हमारे देश और समाज के बाहरी और भीतरी जीवन में प्रत्यक्ष और परोक्ष परिवर्तन हो रहे थे, उन्होने जिस तरह सामूहिक व्यवहार और कर्म के क्षेत्र में राष्ट्रीय एकता की भावना जगाइ और राष्ट्रीय संघर्ष को प्रेरणा दी, उसी तरह सांस्कृतिक क्षेत्र में उसने स्वच्छन्दतावाद की प्रवृत्ति को प्रेरणा दी।... इस दृष्टि से ही हम कह सकते हैं कि देश की प्राचीन संस्कृती और पाश्चात्य काव्य के प्रभावों को ग्रहण करती हुई छायावादी कविता राष्ट्रीय जागरण के कोड़ में पनपी और फुली फली।'' हाँ, राष्ट्रीय आन्दोलनों का यह लाभ आवश्यक हुआ कि व्यक्तिवाद असमाजिक पथों पर न भटका।

धार्मिक परिस्थिती

छायावादी काव्य की दार्ननिकत्ता प्राचीन अद्वैतवाद तथा सर्वात्मवाद से गहरे रूप में प्रभावित हैं। महादेवी वर्मा के शब्द इस सम्बन्ध में विशेष द्रष्टव्य हैं-''छायावाद कवि धर्म के ध्यात्मक से अधिक दर्शन के ब्रहह्मा का ऋणी है जो मूर्त और अमूर्त विश्व को मिलाकर पूर्णता पाता है। बुध्दि के सूक्ष्म धरातल पर कवि ने जीवन की अखण्ड़ता का भावन किया, ऱ्हदय की भाव भूमि पर उसने प्रकृति में बिखरी सौन्दर्य सत्ता की रहस्यमयी अनुभूति की और दोनों के साथ. स्वानुभूति सुखदु:खो को मिलाकर एक ऐसी काव्य-सृस्टी उपर्स्थित कर दी जो प्रकृतिवाद, ऱ्हदयवाद, आव्यात्मवाद, रहस्यवाद, छायावाद आदि अनेक नामों का भार सम्भाल सकी।'' असके अतिरिक्त छायावादी काव्य पर रामकृष्ण परमहंस, विवेकानन्द, गाँधी,टैगोर तथा अरविन्द के दर्शनों का भी गहरा प्रभाव पड़ा।

सामाजिक परिस्थिती

पाश्चात्य सभ्यता, संस्कृति और अर्थव्यवस्था के प्रभाव के फलस्वरूप भारतीय समाज के सम्पूर्ण जीवन में एक नवीन परिवर्तन तथा विचरों में एक नूतन क्रांति आई। इस प्रभाव ने जहां एक और हमारे देश में राष्ट्रीय एकता और राष्ट्रीय आन्दोलनों को जन्म दिया वहां इसने सांस्कृतिक क्षेत्र में स्वच्छन्दतावादी प्रवृत्ति को अधिकाधिक प्रोत्साहित किया। हमारे देश के नवयुवकों में व्यक्तिवाद का बोलबाला हुआ। उनके वैयक्तिक, पारिवारिक एवं सामाजिक दृष्टिकोन में पर्याप्त अन्तर आया। किन्तु दु:खद आत यह थी कि स्वच्छन्दतावादी नवीन पीढ़ी धार्मिक, सामाजिक रूढ़ियों, जाति-पाँति, अन्धविश्वासों और मिथ्याड़म्बरो को छिन्न-भिन्न करने को सन्नध्द, थी, जबकि उसकें समक्ष पुरानी पीढ़ी की समस्तरूढ़ियाँ अटल चट्टान के समान थी जो कि उनके स्वप्नों के स्वर्णिम संसार को चकनाचूर कर देती थी। परिणामस्वरूप जीवन में कुण्ठा, अतृप्ति और निराशा की भावनायें शनै:शनै:बध्दमूल्य होने लगीं, जिनकी अभिव्यक्ति छायावादी काव्य में स्पश्ट रूप में दखी जा सकती हैं।

छायावादी काव्य की सामाजिक और सांस्कृतिक पृष्ठ-भूमि का विश्लेषण करते हुए केसरीनारायण शुल्क लिखते हैं- ''छायावाद के व्यक्तिवाद, आत्माभिव्यक्ति, कलावाद आदि बर्जु आई (Bourgeoisie)संस्कृति के ही विविध रूप हैं। हमारे समाज की व्यवस्था ही प्रतिद्वन्द्विता के आधार पर हैं।.... आज के समाज के मूल्यांकन का मानदण्ड अधिकार-स्वायक्त मूल्य (Property Values)के आधार पर है तो जनहित की अपेक्षा व्यक्तिगत सफलता की भावना प्रमुख हो गई। पूँजीवादी मितव्ययता (Capitalist Economy) द्वारा जिसका आधार ही व्यक्तिगत एकाधिकार है संघटित समाज में व्यक्ति का प्राधान्य अनिवार्य था।'' इस प्रकार की सामाजिक स्थिती में छायावादी कवि में व्यक्तिवाद का प्राधान्य अनिवार्य था और उसका स्वच्छन्दतावाद तथा कलावाद की दुहाई देना भी स्वाभाविक था।

साहित्यिक परिस्थिती

पाश्चात्य सभ्यता और संस्कृतिक के समान वहां के साहित्य का भी विशेषत: अंग्रेजी साहित्य के रोमांटिसिज्म का हिन्दी के छायावादी काव्य पर गहरा प्रभाव पड़ा है। अंग्रेजी साहित्य में स्वच्छन्दतावाद रोमांटिसिज्म का आरम्भ अठारहवी शती में सेम्युअल रिचर्ड़सन, हेनरी फीलि्ड़ंग, स्टर्न और गोल्ड़स्मिथ (सन् १७२८-७४ ई) से माना जा सकता हैं। आगे चलकर इस धारा के अन्तर्गत वर्ड, सवर्थ, शैली, कीट्स, बायरन और कूपर आदि ने अपनी अमूल्य कृतियों का प्रणयन किया। अंग्रेजी साहित्य की स्वच्छन्दतावादी काव्यधारा की प्रमुख विशेषतायें-''प्राचीन रूढ़ियों के प्रति विद्रोह, मानवतावाद, वैयक्तिक प्रेम की अभिव्यजंना, रहस्मात्मकता, सौन्दर्य का सूक्ष्म चित्रण, प्रकृति में चेतना का आरोप, गीतिशैली और व्यक्तिवाद आदि हिन्दी के छायावाद में समान- रूप से मिलती हैं।'' इस साम्य का कारण अनुकरण नहीं, बल्कि दोनों कवियों के दृष्टिकोण में समता हैं। बंगला-साहित्य अंग्रेजी- साहित्य के रोमोंटिसिज्म से प्रभावित हो चुका था, अत: हिन्दी के छायावादी कवि ने भी प्रभाव-ग्रहण करने में संकोच नही किंया।

अंग्रेजी साहित्य के इस स्व्चछन्दतावाद से छायावाद के इस घनिष्ठ साम्य को देखकर, हिन्दी साहित्य के कुछ आलोचकों ने छायावाद को अंग्रेजी के स्वच्छन्दतावाद को ही हिन्दी का संस्करण कह दिया हैं जो कि नितानत असमीचीन हैं। हम पहले कह चुके हैं कि छायावाद पर अंग्रेजी के स्वच्छन्दतावाद का प्रभाव आवश्य है, और इन दोनों में बहुत कुछ साम्य भी है, छायावाद केवल स्वच्छन्दतावाद की अन्धानुकृति मात्र नही है। छायावपाद का उद्‌भव भारत की सांस्कृतिक और सामाजिक परिस्थितीयों के अनुरूप हुआ। छायावादी काव्यकार का जीवन और जगत के प्रति अपना एक निश्चित दृष्टिकोण है। यदि हिन्दी का छायावाद अंग्रजी के स्वच्छन्दतावाद के फैशन की नकल है तो तत्कालीन फैशन की नकल होनी चाहिये थी, फिर सौ वर्ष पुराने फैशन की क्यों? छायावाद और

स्वच्छन्दतावाद को साम्य के आधार पर परस्पर अभिन्न मानना भ्रम होगा, क्योंकि छायावाद की सृष्टि एक सर्वथा भिन्न देश और कल में हुई।

वस्तुस्थिती तो यह है कि छायावाद और स्वच्छन्दतावाद की उदयकालीन परिस्थितीयों में एक गहरा साम्य हैं। जिस प्रकार अंग्रेजी साहित्य में स्वच्छन्दतावाद के जन्म से पुव साहित्य में अतिनैतिकता, सुधानरवाद, इतिवृत्तात्मकता, शुष्कता तथा शास्त्रीय रूढ़ियों का बोलबाला या ठीक यही दशा छायावाद के रूप में हुई। डॉ.गणपती चन्द्र गुप्त के शब्दो में- ''फ्रासं की राज्य क्रांती ने इंगलैड़ के कवियों को वैयक्तिक स्वतन्त्रता का संदेश दिया तो दूसरी और स्वराज्य हमारा जन सिध्द अधिकार है की घोषणा ने हमारे छायावादियों को गुलामी का भावना से मुक्त किया। रोमांटिक युग के युवकों को सौन्दर्य और प्रेम की उन्मुक्त लालसा पर धार्मिक संस्थाओं एवं सामाजिक मान्यताओं का अंकुश लगा हुआ था तो छायावादी युग के प्रेमियों पर हिन्दू समाज की रूढ़ियो का नियंत्रण था। रोमांटिक कवि हुआ था तो छायावादी युग के प्रेमियों पर हिन्दु समाज की रूढ़ियो का का नियंत्रण था। रोमांटिक कवि दैनिक जीवन की असंगतियों, विषमताओं एवं कटुता का त्राण प्रकृति एवं आध्यात्म में ढूंढ़ने को विविश ाहुये थे तो हिन्दी कवियों को भी इनसे बढ़कर और कोई आश्रय नहीं था। अत: मूलाधार की दृष्टि से भी दोनों में भी गहरा साम्य हैं।''

परिभाषा एवं स्वरूप

छायावाद क्या है? इस विषय में हिन्दी-साहित्य के विद्वानों ने इतना अधिक लिखा है कि कदाचित एक साधारण पाठक विभिन्न विद्वानों द्वारा की गइ परिभाषाओं को पढ़कर असमंजस में पड़ जाता है। छायावाद के स्वरूप को स्पष्ट करनेवाले आलोचकों को दो वगों में विभक्त किया जा सकता दृष्टिकोण प्रस्तुत किया हैं। इस प्रकार (क) आलोचकों और (ख) कवि आलोचकों द्वारा दी गई छायावादविषयक परिभाषाओं का क्रम से अध्ययन करके इस काव्यध्यारा के सम्बन्ध में जानने का प्रयत्न करेंगे-

क) (१) आचार्य शुल्क ने छायावाद का ग्रहण दो अर्थो में किया हैं- एक तो आध्यात्मिकता- प्रधान-प्रतीकवादी हिन्दी की कविताएँ और दूसरा एक विशेष प्रकार की अभिव्यक्ती-शैली। उनके शब्दों में छायावाद छन्द का प्रयोग दो अर्थो में समझना चाहिए-एक तो रहस्यवाद के अर्थ में जहाँ उसका सम्बन्ध काव्य वस्तु से होता हैं अर्थात जहाँ कवि उस अनन्त और अज्ञात प्रियतम को आलंबन कर अत्यन्त चित्रमयी भाषा में प्रेम की अनेक प्रकार से व्यंजना करता हैं। छायावाद का दूसरा प्रयोग काव्य शैली या पध्दति-विशेष के व्यापक अर्थ में है।''

(२) डॉ. राजकुमार ने भी शुल्क के समान छायावाद की रहस्यवाद से अभिन्न माना हैं। इनके शब्दों में ''परमात्मा की छाया आत्मा में पड़ने लगती हैं और आत्माकी छाया परमात्मा में। यही छायावाद हैं।''

(३) श्री शांतिप्रिय द्विवेदी के शब्दों में ''छायावाद एक दार्शनिक अनुभूति है।'' इस प्रकार इन्होंने छायावाद को रहस्यवाद से कुछ मिलता- जुलता बतया हैं।

(४) डॉ. नगेन्द्र ने एक और तो 'छायावाद को स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह' माना है और दूसरी और इसे 'जीवन के प्रति एक भावात्मक दृष्टिकोण' हाक हैं। उनके शब्दो में ''छायावाद एक विशेष प्रकार की भावपध्दति है, जीवन के प्रति एक विशेष भावात्मक दृष्टिकोण है। जिस प्रकार भक्ति-काव्य जीवन के प्रति एक विशेष भावात्मक दृष्टिकोण था और रीतिकाव्य एक दूसरे प्रकार का उसी प्रकार छायावाद भी एक विशेष प्रकार का भावात्मक दृष्टिकोण हैं।''

(५) आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी के अनुसार, ''मानव अथवा प्रकृति के सूक्ष्म किन्तु व्यक्त सौन्दर्य में आध्यात्मिक छाया का भाव मेरे विचार में छायावाद की एक सर्वासामान्य व्याख्या हो सकती है।'' हमारे विचारानुसार आचार्य जी की इस सर्वसामान्य व्याख्या में छायावाद के कतिपय छारों को ही छुआ गया है, छायावाद के संपुर्ण स्वरूप को स्पष्ट नहीं किया गया हैं।

(६) डॉ. देवराज का कहना है कि ''छायावाद गीति-काव्य है, प्रकृति काव्य है, प्रेम-काव्य हैं।'' उक्त परिभाषा में बहुत कुछ वह कह देने की लालसा हैं।

हिन्दी के कुछ अन्य विद्वान आलोचकों ने छायावाद के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए अपने-अपने मन्तव्य प्रकट किये हैं-''छायावाद द्विवेदी युग की इतिवृत्तात्मक कविता की प्रतिक्रिया है।'' ''पकृति में चेतना का आरोप छायावाद है।'' ''मानवीकरण छायावाद।'' ''जिस प्रकार परमात्मा के प्रति प्रणयन रहस्यवाद है इसी प्रकार प्रकृति के प्रति प्रणयन छायावाद है।'' पर इन सभी लक्षणों में सर्वागीणता न होकर एकांगिता है।

ख) (१) जयशंकर प्रसाद छायावाद के सम्बध में लिखते हैं- ''छाया भारतीय दृष्टि से अनुभूति और अभिव्यक्ति- भंगिमा पर अधिक निर्भर करती है। ध्वन्यात्मकता, लाक्षणिकता, सौन्दर्य, प्रकृति-प्रधान तथा उपचारवक्ता के साथ स्वानुभूति की विवृत्ति छायावाद की विशेषतोयें है। अपने भीतर से मोती के पानी की तरह अन्तर स्पर्श करके भाव, समर्पण करने वाली अभिव्यक्ति की छाया कान्तिमय होती है।''

(२) महादेवी वर्मा का कहना है कि ''छायावाद ने मनुष्य के ह्रदय और प्रकृति के उस सम्बन्ध में प्राण डाल दिये जो प्राचीन काल से विम्ब-प्रतिबिम्ब के रूप में चला आ रहा था और जिसके कारण मनुष्य को प्रकृति अपने दु:ख मे उदात्त और सुख मे पुलकित जान पड़ती थी। छायावाद की प्रकृति घट, कूप आदि में भरे जल की एकरूपता के समान अनेकरूपों में प्रकट एक महाप्राण बन गई अत: अब मनुष्य के अश्रू, मेघ के जल-कण और पृथ्वी के औरस-बिन्दुओं का एक ही कारण एक ही मूल्य हैं।''

संदर्भ ग्रंथ सूची

१.हिंदी साहित्य का इतिहास :— रामचंद्र शुक्ल,काशी प्रचारिणी सभा,काशी

२.हिंदी साहित्य :— डॉ. कृष्णलाल

३. अधुनिक हिंदी साहित्य (१८५० ते १८००) डॉ. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय,भा. हिंदी परिषद,इलाहाबाद वि.वि.

४. हिंदी साहित्य:— तृतिय खण्ड: सं.डॉ.धीरेंद्र वर्मा,भारतीय हिंदी परिषद ,इलाहाबाद

५. हिंदी वाड.मय :२० वी.सदी:सं.डॉ.नागेंद्र :विनोद पुस्तक मंदीर ,आगरा

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638X
www.aiirjournal.com